श्री महावीराय नमः   जैनं जयति शासनम्   श्रीमत् सुदर्शन गुरवे नमः

जैन संस्कार शिविर

पाठ्यक्रम भाग-1

जैन संस्कार शिविर समिति

A step for the Jain youth of tomorrow

संस्करण : 2025

प्रकाशकीय

भारत देश उच्च संस्कृति वाला देश रहा है और इस संस्कृति की उज्ज्वलता बनाये रखने हेतु विभिन्न समाजों में बच्चों व युवाओं को नैतिक व धार्मिक संस्कार प्रदान करने के प्रयास चलते रहते हैं।

पूज्य गुरुदेव संघ-शास्ता शासन-प्रभावक श्री सुदर्शन लाल जी म. सा. के मुनि-संघ के महामुनिराज महास्थविर, गणाधीश श्री प्रकाश चन्द्र जी म., संघनायक 'शास्त्री' श्री पद्‌मचन्द्र जी म., संघ संचालक मनोहर व्याख्यानी श्री नरेश मुनि जी म. तथा इनके संघवर्ती अन्य विद्वान् मुनिराजों एवं महासतियों के कृपापूर्ण आशीर्वाद से **'जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली'** द्वारा सन् 2012 से उत्तर भारत के कई प्रान्तों में स्थानीय एस. एस. जैन सभाओं के सहयोग से जैन-संस्कार-शिविर लगाए जा रहे हैं। ये शिविर पूर्णरूप से सम्प्रदाय-निरपेक्ष हैं।

शिविरों के लिए समिति हर 2-3 वर्ष के अन्तराल पर पुस्तकों के पाठ्यक्रम में परिवर्तन करती रहती है। इस वर्ष हमने शिविर की पुस्तकों में 'गुरु सुदर्शन संघ' के मुनिराज श्रद्धेय श्री दिनेश मुनि जी म. द्वारा लिखित व **"जय जिनशासन प्रकाशन"** द्वारा प्रकाशित पुस्तक **'25 बोल with a twist'** और **'cool-cool गुरुकुल'** के कुछेक पाठों का मिश्रण कर विषय-वस्तु को अधिक रोचक बनाने का प्रयास किया है। आशा है, पाठकों को यह प्रयास अच्छा लगेगा।

इस पुस्तक के निर्माण में अनेक पूज्य गुरु भगवन्तों व विभिन्न लेखकों की रचनाओं का विनम्र सहयोग लिया गया है। हम उन सब के हृदय से आभारी हैं।

इस पुस्तक को प्रत्येक जैन सूक्ष्मता से पढ़े, समझे और उस पर आचरण करे। हमें आशा है कि यह पुस्तक बालकों तथा युवाओं को जैन धर्म के संस्कार देने में सफल रहेगी।

इसी मंगल मनीषा के साथ...

रवीन्द्र जैन
शिविर-संयोजक

प्रकाशक :
जय जिनशासन प्रकाशन
212, वीर अपार्टमैन्टस्, सैक्टर 13,
रोहिणी, दिल्ली-110 085
Mob: +91-98102 87446
Email : jaijinshaasanprakaashan@gmail.com

रूपांकन :
सिस्टम्स् विज़न, नई दिल्ली
Mob: +91-98102 12565
मुद्रक :
पारस ऑफसैट प्रा. लि., दिल्ली
Email: info@parasoffset.com

श्री मया-मदन-सुदर्शन-प्रकाश-पद्म-नरेश गुरुभ्यो नमः

विषयक्रम

क्रमांक शीर्षक पृष्ठ संख्या

सूत्र विभाग

1. नवकार मंत्र 2
2. गुरु-वन्दन सूत्र 5

तत्त्व विभाग

3. जय जिनेन्द्र 7
4. Good Deeds 9
5. Bad Deeds 12
6. धर्मग्रन्थ एवं धर्मगुरु 15
7. तीर्थ और तीर्थंकर 16
8. स्थानकवासी मुनियों के नियम 17
9. गति चार – ये सब क्या हो रहा है? 18
10. जाति पाँच – केवल इंसान ही नहीं बोलते 23
11. काया छः – हमें इंसाफ चाहिए 27

सामान्य ज्ञान व कथा विभाग

12. भगवान् महावीर स्वामी 31
13. जैन बालक के कर्तव्य 33
14. Jain Festivals 35
15. Manners & Etiquettes 37

काव्य विभाग

16. हम बालक हैं 40
17. Numers Poem 40
18. हाय हैलो छोड़िए जय जिनेन्द्र बोलिए 41
19. वीर भगवन् 41
20. जयकारे 42
21. Jain Poem 44

1. नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्व साहूणं
एसो पंच नमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

यह मंत्र जैन धर्म का मूल मंत्र है और इसमें पाँच बड़ी महान आत्माओं को नमस्कार किया गया है। उनको किया हुआ नमस्कार हमारे लिए सब पापों का नाशक व मंगलकारी है।

अर्थः

नमो अरिहताणं	अरिहन्तों को नमस्कार हो। (Bow Down to Conquerors of Attachment & Hate)
नमो सिद्धाणं	सिद्धों (Liberated Souls) को नमस्कार हो।
नमो आयरियाणं	आचार्यों (Preceptors) को नमस्कार हो।
नमो उवज्झायाणं	उपाध्यायों (Teachers of Knowledge) को नमस्कार हो।
नमो लोए सव्व-साहूणं	लोक (Universe) में सब साधुओं (Sages) को नमस्कार हो।
एसो पंच नमोक्कारो	यह पाचों को किया हुआ नमस्कार।
सव्व-पावप्पणासणो	सब पापों (All Sins) का नाश करने वाला है।
मंगलाणं च सव्वेसिं	सभी मंगलों (Auspicious) में
पढ़मं हवइ मंगलं	प्रथम (First) मंगल है।

प्रश्न-उत्तर

प्र. 1. मंत्र किसे कहते हैं?

उ. शब्दों का ऐसा समूह (Group), जिनकी संख्या कम हो और भाव (Expression of Thoughts) अधिक हों और जिसको चितारने (Chant) से मन शान्त हो, उसे मंत्र (Mantra) कहते हैं।

प्र. 2. अरिहंत किसे कहते हैं?

उ. a. जिन आत्माओं के 4 कर्म [ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय (Deluding), अन्तराय (Obstructing)] समाप्त हो गए हैं, ऐसी आत्माओं को हम अरिहंत या अरिहंत भगवान् कहते हैं। OR

उ. b. जिन आत्माओं ने राग और द्वेष (Attachment & Hate) पर विजय (Conquor) पा ली है, उन्हें हम अरिहंत कहते हैं।

प्र. 3. सिद्ध किसे कहते हैं?

जिन आत्माओं के 8 कर्म समाप्त हो गए हैं, उन्हें हम सिद्ध या सिद्ध भगवान् कहते हैं। प्रथम 4 कर्म तो अरिहंत भगवान् वाले और शेष 4 कर्मों के नाम इस प्रकार हैंः—

1. वेदनीय कर्म (Pertaining to Feelings);
2. नाम कर्म (Body Physique Determing);
3. गोत्र कर्म (Status);
4. आयुष्य कर्म (Life Span).

प्र. 4. अरिहंत और सिद्ध भगवान् में अन्य क्या अंतर (differences) होते हैं।

उ.

	अरिहंत	सिद्ध
1.	चार कर्म नष्ट हुए हैं	आठ कर्म नष्ट हो गए हैं
2.	शरीर धारी हैं	अशरीरी, मोक्ष में विराजमान हैं
3.	हमें दिखाई देते हैं	हमें दिखाई नहीं देते
4.	धर्म का उपदेश देते हैं	उपदेश नहीं देते हैं।

प्र. 5. आचार्य किसे कहते हैं?

उ. ऐसे मुनिराज, जो स्वयं आचार (Code of Conduct) का पालन (Follow) करते हैं और अपने अधीन अन्य साधु-सतियों, श्रावक-श्राविकाओं से पालन करवाते हैं। (He is like a Principal of a School)

प्र. 6. उपाध्याय किसे कहते हैं?

उत्तरः ऐसे मुनिराज, जो बहुत अधिक ज्ञानी हैं और दूसरों को भी ज्ञान देते हैं, उन्हें हम उपाध्याय कहते हैं। (He is like a Senior Teacher of a School or Professor of a College)

प्र. 7. साधु किसे कहते हैं?

उत्तरः जो व्यक्ति 5 महाव्रतों (Five Vows) का पालन (Follow) करता है, उसे साधु कहते हैं। जैन दर्शन के अनुसार 5 महाव्रत इस प्रकार से हैं:

साधु-साध्वी के 5 महाव्रत

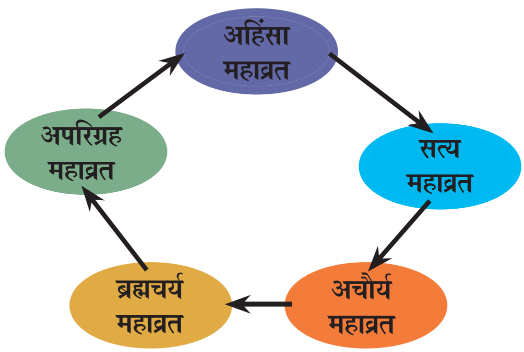

1. अहिंसा महाव्रत (Vow not to kill any Living Being)
2. सत्य महाव्रत (Vow not to lie in any Circumstances)
3. अचौर्य महाव्रत (Vow not to steal Any Thing)
4. ब्रह्मचर्य महाव्रत (Vow to be Chaste for the Whole Life)
5. अपरिग्रह महाव्रत (Vow to Renounce Property etc.)

आचार्य, उपाध्याय भी साधु के नियमों का तो पालन करते ही हैं। साधु के ये 5 महाव्रत मूल गुण भी कहलाते हैं। इन व्रतों का पालन प्रत्येक साधु-साध्वी के लिए Compulsory है। इन गुणों के अलावा हर साधु-साध्वी में अपने-2 कुछ अलग गुण हो सकते हैं, जिन्हें हम उत्तर गुण कहते हैं और साधु-साध्वी अपने सामर्थ्य के अनुसार उनका पालन करते हैं।

2. गुरु-वन्दन सूत्र

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि,
वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि,
कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं,
पज्जुवासामि, मत्थएण वंदामि ॥

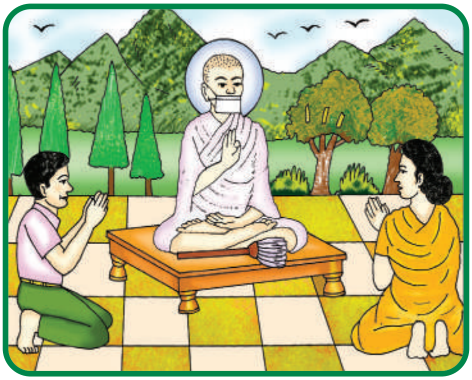

जैसे हम स्कूल में अपने Teachers को Good Morning or Good Afternoon बोलकर उनके प्रति Respect दिखाते हैं, उसी प्रकार हम अपने धर्म गुरुओं के प्रति 'गुरु-वन्दन सूत्र' पढ़कर तीन बार विधि सहित वन्दना-नमस्कार करते हैं।

अर्थः

तिक्खुत्तो	तीन बार (Three Times)
आयाहिणं पयाहिणं	दाहिनी ओर से प्रदक्षिणा
करेमि	करता हूँ (I do)
वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि	(स्तुति, नमस्कार, सत्कार, सम्मान) (Bow down, Kneel Down, Honour, Pay Respect)
कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं	कल्याण रूप, मंगल रूप, धर्मदेव, ज्ञान स्वरूप (Blisses, Auspicious, Divine, Knowledge in Carnate)

पज्जुवासामि	उपासना करता हूँ (I Worship)
मत्थएण	मस्तक झुकाकर
वंदामि	वंदना करता हूँ (Bow Down)

प्र. नमस्कार किसे कहते हैं?

उ. स्वयं को छोटा तथा बड़ों को बड़ा समझते हुए, स्वयं की काया को धरती की ओर झुकाना नमस्कार है।

प्र. सत्कार और सम्मान में क्या अतंर है?

उ. सत्कार में स्वयं की Body को झुकाना है और सम्मान में अपने मन के भावों को झुकाना है।

प्र. गुरु वंदना की विधि क्या है?

उ. गुरुओं के समीप आकर दोनों हाथों को Fold करके Clockwise Direction में घुमाते हुए तीन बार 'गुरु-वन्दना सूत्र' पढ़ते हुए अपने 5 अगों (2 हाथ, 2 पैर, 1 मस्तक) को जमीन पर टिकाकर नमस्कार करना।

प्र. गुरुओं को तीन बार वंदना क्यों की जाती है?

उ. गुरुओं के पास सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन व सम्यक् चारित्र (Right Knowledge, Right Perception & Right Character) नामक 3 गुण (Quality) होते हैं। वे गुण हम में भी आ जाएं, इन भावों से हर एक गुण के लिए एक वन्दना की जाती है।

प्र. उपासना किसे कहते हैं?

उ. गुरुओं के निकट बैठना उपासना कहलाती है। गुरुओं के पास बैठते समय हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी वजह से उनको असुविधा न हो और उनसे धर्मचर्चा के अलावा व्यर्थ की बातें न करें। (i.e. We should sit near to our Guruji in such a way that they don't feel inconvenience and should not discuss Worldly Things except Dharma).

प्र. कल्याण और मंगल किसे कहते हैं?

उ. मोक्ष को प्राप्त कराने वाले को कल्याण कहते हैं और पाप रूपी विघ्न को दूर करने वाले को मंगल कहते हैं।

3. जय जिनेन्द्र

Hi–Hello छोड़िए–जय जिनेन्द्र बोलिए

अभिवादन के तरीके

हिन्दू
(Hindu)
नमस्ते
राम-राम, राधे-राधे
हरे कृष्णा

मुस्लिम
(Muslim)
अस्सलाम आलेकुम
वालेकुम अस्सलाम

सिक्ख
(Sikh)
सत श्री अकाल
वाहेगुरु

ईसाई
(Christian)
Hello
Good Day

जैन
(Jain)
जय
जिनेन्द्र

बुद्ध
(Buddhist)
नमो बुद्धा

Spanish
Hola
होला

French
Bonjour
बोनजू

जिनेन्द्र का अर्थः

1. जैन धर्म के संस्थापक (Founder) को जिनेन्द्र कहते हैं।
2. जिनेन्द्र शब्द जिन + इन्द्र से बना है।
3. अपनी सभी बुराईयों को जीतने वाले जिन कहलाते हैं।
   उनमें जो इन्द्र (Supreme Power) के समान हैं, वे जिनेन्द्र कहलाते हैं।
   इन्हें तीर्थंकर भी कहते हैं।

जय जिनेन्द्र किन को बोलेंः

4. GOOD DEEDS

अन्न पुण्य

भोजन खिलाना।

1

पक्षियों को
दाना डालना।

गाय को
खाना खिलाना।

गरीबों को
खाना खिलाना।

पान पुण्य

पानी पिलाना।

2

पशु-पक्षियों का
Bowl रखना।

प्यासे को
पानी पिलाना।

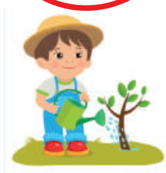

पौधों को
पानी देना।

लयन पुण्य

रहने के लिए स्थान बनवाना।

3

Animal Shelter
बनवाना।

Homeless Shelter
बनवाना।

गौशाला
बनवाना।

शयन पुण्य
विश्राम के लिए जगह देना।

वस्त्र पुण्य
वस्त्र देना।

मन पुण्य
मन से भला सोचना।

4

अतिथि घर बनवाना।

पार्क में बेंच लगवाना।

धूप से बचने के लिए Shed लगवाना।

5

सर्दी में कंबल बाँटना।

जरूरतमंद को Gift में कपड़े देना।

अनाथाश्रम में वस्त्र बाँटना।

6

How May I Help Him?

सर्वे भवन्तु सुखिनः।

Oh God ! Plz Save Him.

वचन पुण्य
अच्छे वचन बोलना।

7

God
Bless U!

चिंता मत करो,
सब अच्छा होगा।

May I
Help U ?

काय पुण्य
शरीर से सेवा करना।

8

Donating
Blood / Organ.

बीमार की
सेवा करना।

मां-बाप की
सेवा करना।

नमस्कार पुण्य
प्रणाम करना।

9

गरीब का
सम्मान करना।

अपने गुरु को
प्रणाम करना।

मां-बाप को
प्रणाम करना।

5. BAD DEEDS

Violence
हिंसा करना।

1

चींटी को मारना।

मच्छर को मारना।

किसी को बुरी तरह से डराना।

Telling Lie
झूठ बोलना।

2

कुछ चीज पाने के लिए।

एक-दूसरे को फँसाने के लिए।

सजा से बचने के लिए।

Stealing
चोरी करना।

3

पर्स चुराना।

दुकान से चीजें चुराना।

Stealing an Idea.

Abusing
गाली देना।

4

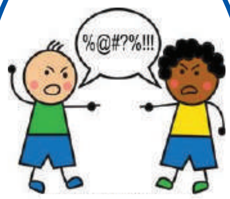

अपशब्द बोलना।

किसी को नीचा दिखाना।

किसी का बुरा सोचना।

Fighting
लड़ाई करना।

5

थप्पड़, मुक्का, लात मारना।

ऊँची-2 आवाज़ में लड़ना।

Cold War.

Cheating
धोखा करना।

6

Cheating in games.

Cheating in exams.

Fraud of money in office.

Disrespecting the Elders
बड़ों का अनादर करना।

7

Shouting on Elders.

अध्यापक का सम्मान न करना।

Not offering seats to elders.

Misuse of Mobile
मोबाईल का गलत प्रयोग करना।

8

Misuse in Examination.

Playing Violent games in mobile.

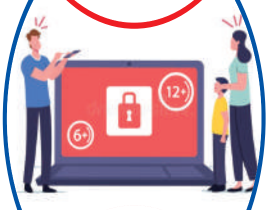

गलत चीजें देखना।

Spreading Dirt
गंदगी फैलाना।

9

घर को गंदा रखना।

Public Place को गंदा करना।

Not keeping your surroundings clean.

6. धर्मग्रन्थ एवं धर्मगुरु

धर्म Religion	धर्मग्रन्थ Religious Books	धर्मगुरु Founder	चिह्न Sign
सनातन	भगवद्गीता वेद	श्री राम, श्री कृष्ण आदि अवतार	ॐ
मुस्लिम	कुरआन	मौहम्मद साहिब	
सिक्ख	गुरुग्रन्थ साहिब	गुरु नानक देव	
ईसाई	बाईबिल	ईसा मसीह	
बौद्ध	त्रिपिटक	महात्मा बुद्ध	
जैन	32 आगम	तीर्थंकर (ऋषभदेव, महावीर आदि)	परस्परोपग्रहो जीवानाम्

7. तीर्थ और तीर्थंकर

प्र. तीर्थंकर किसे कहते हैं?

उ. तीर्थ की स्थापना करने वाले को 'तीर्थंकर' कहते हैं। जैन धर्म के अनुसार हम उन्हें अरिहंत या जिनेश्वर भगवान् भी कहते हैं।

प्र. तीर्थ किसे कहते हैं?

उ. तीर्थ दो प्रकार के होते हैं। पहले हैं पवित्र स्थल जैसे बदरीनाथ, केदारनाथ, मानसरोवर आदि। ये सब द्रव्य तीर्थ हैं।

दूसरे तीर्थ आध्यात्मिक हैं, ये 4 हैं– साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। इसे हम 'चतुर्विध संघ' भी कहते हैं।

प्र. जैन धर्म के अनुसार तीर्थंकर कितने हैं?

उ. वर्तमान काल के अनुसार 24 तीर्थंकर हैं और उनके नाम इस प्रकार हैं।

24 तीर्थंकर भगवानों के नाम

1. ऋषभदेव जी
2. अजितनाथ जी
3. संभवनाथ जी
4. अभिनन्दन जी
5. सुमति नाथ जी
6. पद्मप्रभ जी
7. सुपार्श्वनाथ जी
8. चंद्रप्रभ जी
9. सुविधिनाथ जी
10. शीतलनाथ जी
11. श्रेयांसनाथ जी
12. वासुपूज्य जी
13. विमलनाथ जी
14. अनन्तनाथ जी
15. धर्मनाथ जी
16. शान्तिनाथ जी
17. कुन्थुनाथ जी
18. अरनाथ जी
19. मल्लिनाथ जी
20. मुनिसुव्रत जी
21. नमिनाथ जी
22. अरिष्टनेमि जी
23. पार्श्वनाथ जी
24. महावीर स्वामी जी

8. स्थानकवासी मुनियों के नियम

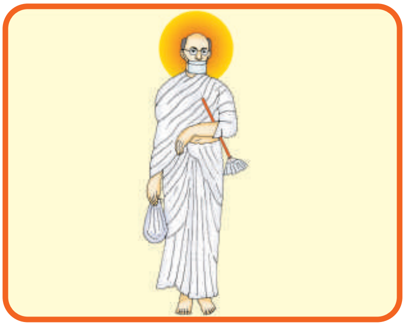

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि कोई भी व्यक्ति जब जैन साधु या साध्वी बनता है तो पाँच महाव्रतों को ग्रहण करता है और उन्हें सम्पूर्ण जीवन निभाता है। यह 5 महाव्रतों का नियम चारों सम्प्रदाय के साधुओं (साध्वियों) पर लागू होता है और इन्हीं 5 महाव्रतों में जैन साधु की **आचार सहिंता (Code of Conduct)** आ जाती है। फिर भी इन महाव्रतों के पालन हेतु कुछ **उपनियम (Sub Rules) [समाचारी]** चारों सम्प्रदायों के अपने-अपने हैं। अतः निम्न लिखित नियम स्थानकवासी साधु-साध्वियों के पालन हेतु बताए जा रहे हैं।

1. मुख पर श्वेत मुखवस्त्रिका लगाते हैं, श्वेत वस्त्र धारण करते हैं और हाथ में रजोहरण रखते हैं।
2. नंगे पैर पैदल चलते हैं और दिन के समय ही चलते हैं।
3. गृहस्थों के घर से 42 दोष टालकर भोजन लेते हैं।
4. रात्रि (During Sunset to Sunrise) में किसी भी प्रकार का आहार (Food), पानी (Water, Liquid) व दवाई (Medicine) नहीं लेते हैं।
5. वर्ष में 1 या 2 बार सिर के बालों का हाथ से लोच करते हैं।
6. साधु स्त्री को व साध्वी पुरुष को स्पर्श नहीं करती (i.e. a Male Saint can't Touch any Female and a Female Saint can't Touch any Male irrespective of her or his Age)
7. भोजन हेतु लकड़ी के पात्रों का प्रयोग करते हैं।
8. T.V., Radio, Video, Mobile व Computer का प्रयोग नहीं करते हैं।
9. अपने पास किसी भी प्रकार की सम्पत्ति (like: cash money, gold, silver, bank balance or any property) नहीं रखते हैं।

9. गति चार – ये सब क्या हो रहा है?

गट्टू Key Chains का दीवाना था। Diwali पर मिले रुपये लेकर वह Archies Gallery में गया। वहाँ से उसने Super Hero वाली Key Chains खरीदी। उसने सोचा कि ये Key Chains दिखाकर वह अपने दोस्तों को चिड़ाएगा।

इसी बात पर इतराते हुए, अपनी अंगुली पर Key Chains को घुमाते हुए गट्टू मस्ती में चल रहा था कि अचानक वह एक Bike से टकरा गया। उसका सिर ज़ोर से ज़मीन पर टकराया और वह बेहोश हो गया।

उसे Hospital में Admit किया गया। Dr. ने कहा– 'इसके सिर में गहरी चोट लगी है, जो धीरे-धीरे ठीक होगी। सर्दी में इसका खास ध्यान रखना होगा।'

सर्दी का मौसम शुरू हो गया। गट्टू को कड़कती सर्दी से बचाने के लिए कमरे की अंगीठी में कुछ लकड़ियाँ जला दी गई। आग को देखकर एकदम गट्टू चिल्लाया– 'बचाओ-बचाओ, मैं इस आग में और नहीं जलना चाहता, मुझे बचाओ।'

गट्टू के इस अजीब Reaction से परिवार को चिंता हो गई। Dr. से Consult किया गया। दवाई की Dose बढ़ गई और कुछ दिन तक सब Normal चलता रहा।

इस दौरान घरवालों को एक चूहे ने परेशान कर दिया। खाने की कोई भी चीज़ हो, चूहा उसका भोग लगा जाता। आखिर उसे पकड़ने के लिए एक पिंजरा लगाया गया।

गट्टू टकटकी लगाकर पिंजरे को देखता रहा। फिर अचानक उसने पिंजरे को उठाकर बाहर फेंक दिया और बोला– 'तुम सब मेरे मासूम भाई को कैद नहीं कर सकते।'

गट्टू की माँ बोली– 'ये तुम्हारा भाई कैसे हो सकता है? तुम इंसान हो और ये चूहा!' पर गट्टू कहता रहा– 'नहीं, ये मेरा भाई है। हम दोनों मिठाई की दुकान पर साथ रहते थे।'

गट्टू की ऐसी बातों से परिवार और ज़्यादा परेशान हो गया। अब Dr. के साथ-साथ एक पंडित जी को भी Consult किया गया। पंडित जी बोले– 'बालक पर बुरी आत्मा का साया है। आपको हवन करवाना होगा, इससे देव प्रसन्न हो जाएँगे।'

हवन की तैयारी हो गई। पंडित जी घर आए और हवन शुरू हो गया। पंडित जी बोले– 'बालक को बुलाओ।' गट्टू की माँ उसे बुलाने गई, पर चीखती हुई बाहर आ गई। गट्टू के पापा भाग कर अंदर देखने गए।

अंदर का नज़ारा देखकर वो हैरान हो गए। गट्टू मुकुट और ज़ेवर पहनकर बैठा हुआ था और उसने अपने आस-पास बहुत सारे Bulbs जलाए हुए थे।

पापा ने पूछा– 'गट्टू, ये सब क्या है?'

गट्टू बोला– 'मैं गट्टू नहीं, देव हूँ। मैं आपकी सेवा-भक्ति से प्रसन्न हो गया हूँ, इसलिए मैंने आपके घर को जगमग कर दिया है।' घर में सन्नाटा सा छा गया। पंडित जी वापिस चले गए और हवन Cancel हो गया।

किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि गट्टू को क्या हो गया है! तभी पता

चला कि Colony में एक ज्ञानी संत आए हुए हैं। परिवार गट्टू को लेकर उनके पास गया और अपनी समस्या बताई।

सोच-विचार करके संत बोले– 'यह सब गट्टू के सिर पर लगी गहरी चोट के कारण है। जिस तरह से देखी हुई घटनाएँ, सुनी हुई बातें सपनों (Dreams) के रूप में Flash कर जाती हैं, ऐसे ही चोट के बाद गट्टू को अपने पिछले जन्म Flash Back होने लगे हैं।'

सभी ने हैरानी से पूछा– 'पिछले जन्म?'

संत बोले– 'हाँ! जलती हुई आग को देखकर गट्टू को उसका नरक का जीवन याद आ गया। चूहे को देखकर तिर्यंच (जानवर) का व देव की बात सुनकर देव का जन्म याद आ गया।'

गट्टू के पापा ने पूछा– 'ये अलग-अलग जन्म क्यों होते हैं?'

संत– 'अपने कर्मों के अनुसार जीव को चार तरह के जन्म (पहचान-गति) मिलते हैंः–

1. बहुत ज़्यादा क्रोध व लालच करने से नरक गति मिलती है।
2. झूठ बोलने व चालबाज़ी करने से तिर्यंच गति मिलती है।
3. सरलता से व जीवों पर दया करने से मनुष्य गति मिलती है।
4. अनुशासन में रहने व साधना करने से देव गति मिलती है।'

गट्टू की माँ बोली– 'गुरुजी, आपकी बात सही है, पर अब इस बच्चे का कुछ इलाज बताइए!'

संत– 'इसे हर रोज़ नवकार मंत्र सुनाइए, जिससे इसे शांति मिलेगी, बुरे कर्मों का नाश होगा और पुराने जन्मों का Flash होना रुक जाएगा।'

संत को प्रणाम करते हुए गट्टू के परिवार ने संकल्प किया कि– 'गट्टू के साथ-साथ वे भी नवकार मंत्र का जाप करेंगे और अच्छे कर्म करके अपना जन्म सुधारेंगे।'

□□□

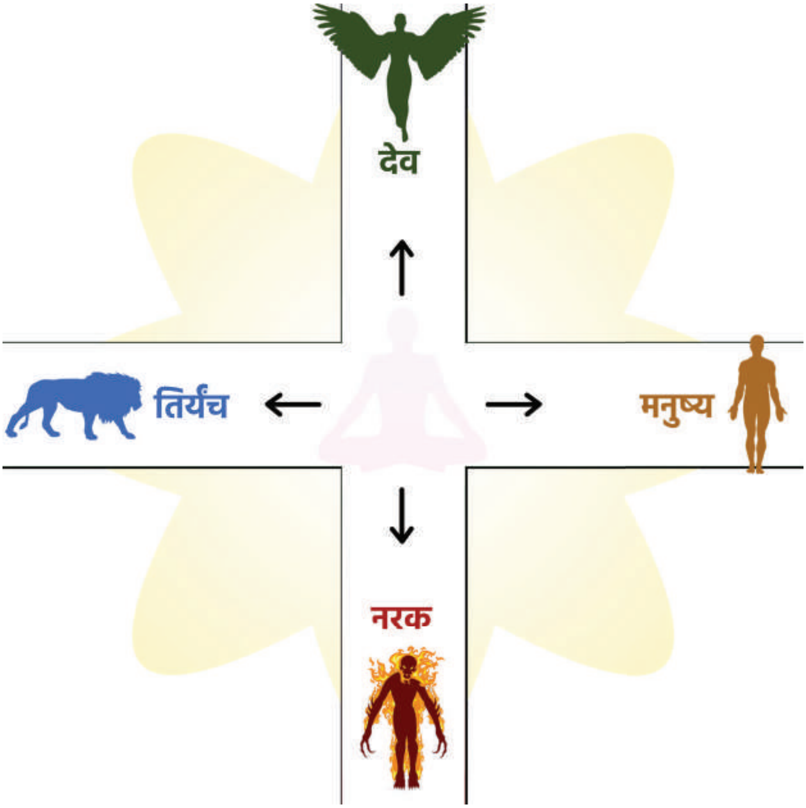

★★★★★ पहला बोल – गति चार ★★★★★

10. जाति पाँच – केवल इंसान ही नहीं बोलते

Ginni गर्मी की छुट्टियों में Family के साथ Goa घूमने गई। Beach पर Tent लगाकर सब सो चुके थे, पर गिन्नी का मन घूमने के लिए मचल रहा था। वह अपनी Magic Stick लेकर समुद्र के किनारे घूमने निकली।

उसकी नज़र एक पेड़ पर पड़ी, जिस पर एक रंग-बिरंगी चिड़िया चहक रही थी। तभी एक बड़ा सा शंख रेंगता-रेंगता वहाँ आया और पेड़ से सटकर बैठ गया। वहाँ पर पहले से एक चींटी व तितली पेड़ के चारों ओर घूम रही थी।

गिन्नी ने सोचा कि इन सब के दिल की बात जाननी चाहिए। उसने अपनी Magic Stick उन सब पर घुमाई, जिससे वे अपनी Real Life की बातें Share कर सकें। गिन्नी का जादू चल गया और वे सब आपस में बातें करने लगे।

सबसे पहले चिड़िया ने पेड़ से कहा– 'दादा! आप कितने अच्छे हो, जो हमें मीठे-मीठे फल देते हो।' यह सुनकर पेड़ से पानी निकलने लगा।

चिड़िया ने पूछा– 'ये क्या है?'

पेड़– 'ये मेरे आँसू हैं।'

चिड़िया– 'आँसू किसलिए?'

पेड़– 'बिटिया! मैं बहुत अभागा हूँ। औरों को फल दे सकता हूँ, पर खुद फलों की मिठास नहीं चख सकता। मेरे पास सिर्फ Touching Power है और कुछ भी नहीं। तुम लोगों की तरह मैं कहीं घूम भी नहीं सकता।'

तभी मोटा शंख बीच में बोल पड़ा– 'हर जीव का अपना-अपना भाग्य है। मुझे ही ले लो, मैं छूने के साथ-साथ Taste भी कर सकता हूँ। पर मुझसे अच्छी तो चींटी दीदी है, जो सूंघ-सूंघकर कहीं से भी खाना ढूँढ लेती है।'

चींटी– 'मोटे भाई! तुम्हें हमेशा खाने की ही लगी रहती है। इसीलिए Burger की तरह फूलते जा रहे हो। पर खाना ही सब कुछ नहीं होता। काश! तितली की तरह मेरी भी आँखें होती, तो मैं भी सारी दुनिया देख पाती।'

तितली बोली– 'बिना कानों के आँखों का मज़ा भी अधूरा है। मैं गीत-संगीत, किसी के सुख-दुख की बात– कुछ भी नहीं सुन सकती। चिड़िया के पूरे मज़े हैं। इसके पास छूने के लिए त्वचा है, चखने के लिए जीभ है, सूंघने के लिए

नाक है, देखने के लिए आँखें हैं और सुनने के लिए कान हैं।'

सभी एक साथ बोले– 'हाँ, सही ज़िंदगी चिड़िया की है।'

चिड़िया घबरा कर बोली– 'आप सबको ये पाँचों Senses (इंद्रियाँ) नहीं मिली तो इसमें मेरी क्या गल्ती है?'

पेड़– 'गल्ती तुम्हारी नहीं, हमारी ही है। हमें भी कभी पिछले जन्मों में पाँचों इंद्रियाँ मिली होंगी, पर उनका Misuse करने के कारण वे हमसे छिन गई।'

गिन्नी सोचने लगी– 'कैसे-कैसे जीव हैं दुनिया में। मेरे पास भी पाँच इंद्रियाँ हैं, अगर इनमें से कोई एक भी न हो तो..........Oh No! I Can't Survive!'

गिन्नी वापिस अपने घर लौटी तो उसने अपने Friends को सारी कहानी सुनाते हुए बताया– 'जीवों की Five Categories (जातियाँ) होती हैं–

1. एकेन्द्रिय– सिर्फ एक Sense (Skin) वाले जीव, जैसे पेड़-पौधे।
2. बेइन्द्रिय– दो इंद्रिय (Skin, Tongue) वाले जीव, जैसे शंख-सीप।
3. तेइन्द्रिय– तीन इंद्रिय (Skin, Tongue, Nose) वाले, जैसे चींटी-मकौड़ा।
4. चतुरिन्द्रिय– चार इंद्रिय (Skin, Tongue, Nose, Eyes) वाले, जैसे मक्खी-मच्छर।
5. पंचेन्द्रिय– पाँच इंद्रिय (Skin, Tongue, Nose, Eyes, Ears) वाले, जैसे इंसान, पशु-पक्षी।'

सभी दोस्तों ने गिन्नी को ये सब समझाने के लिए Thanks दिया व मिलकर एक-दूसरे से Promise किया कि वे कभी भी अपनी Senses का Misuse नहीं करेंगे।

□□□

★★★★★ दूसरा बोल – जाति पाँच ★★★★★

11. काया छः – हमें इंसाफ चाहिए

धरती की चार महाशक्तियाँ– मिट्टी, पानी, अग्नि और हवा– बड़ी तेज़ी से भाग रही थी। रास्ते में पेड़-पौधों ने उनसे दौड़ने का कारण पूछा। वे बोली– 'हम इंसान के व्यवहार से दुखी हैं, इसलिए इंसाफ माँगने धर्मराज, जो UNO से भी बड़ी ताकत है, उस के पास जा रहे हैं।' पेड़-पौधे बोले– 'ऐसी बात है तो हम भी साथ चलते हैं, हमें भी इंसाफ चाहिए।'

सभी धर्मराज के दरबार में पहुँच गए। धर्मराज ने पूछा– 'तुम सब एक साथ कैसे आए?' मिट्टी बोली– 'प्रभो! धरती पर इंसान ने हमारा जीना मुश्किल कर रखा है।' धर्मराज– 'क्या किया उसने?'

मिट्टी– 'ये पूछो, क्या नहीं किया! मेरा सीना छलनी-छलनी कर दिया। कभी पहाड़ों को काटता है, तो कभी खेतों को जलाता है। वह धन के लालच में मुझे खत्म करता जा रहा है। मुझे कहता तो 'धरती माँ' है, पर काम ऐसे करता है।'

पानी ने कहा– 'मैं सबको स्वच्छ करने वाला था, पर इंसान ने गंदगी डाल-डाल कर मुझे दूषित कर दिया।'

अग्नि बोली– 'मैं भोजन पकाने में Help करती हूँ, पर मनुष्य ने कूड़ा-कचरा, बीड़ी-सिगरेट, पटाखे आदि जलाने में मेरा Misuse किया है।'

हवा ने कहा– 'प्रभो! मैं सबको प्राण-वायु (Oxygen) देती हूँ, पर बदले में मुझे मिली–ज़हरीली गैसें। अगर मेरा दम घुट गया तो क्या इंसान ज़िंदा रह पाएगा?'

पेड़-पौधे बोले– 'Roads, Industries, Infrastructure आदि बनाने के लिए मानव जंगलों को काटता जा रहा है। हम नहीं रहेंगे तो बरसात भी नहीं होगी।'

सबकी बात सुनकर धर्मराज बोले– 'तुम सब क्या चाहते हो?' हवा बोली– 'हम इंसान को मज़ा चखाना चाहते हैं।' धर्मराज ने सोचा– 'इसी से मनुष्य को अक्ल आएगी।' वे बोले– 'ठीक है, पर एक-एक करके मज़ा चखाना, नहीं तो मानव-जाति खत्म हो जाएगी।'

धरती पर लौटकर सबसे पहले मिट्टी ने अपना प्रकोप दिखाया। धरती काँपने लगी। भूकंप से बड़ी-बड़ी इमारतें ढह गई। चारों ओर बचाओ-बचाओ की आवाज़ें गूँज उठी।

भूकंप शांत हुआ तो पानी की सुनामी लहरों ने लाखों लोगों को बेघर कर दिया। त्राहि-त्राहि होने लगी।

कुछ दिनों बाद जगह-जगह आग लगने लगी, ज्वालामुखी फटने लगे। एक जगह आग बुझती तो दूसरी जगह लग जाती। लोगों की जान के लाले पड़ने लगे।

फिर तूफ़ानी हवाओं ने सब अस्त-व्यस्त कर डाला। जनता घर से बाहर निकलने से डरने लगी।

पेड़-पौधों को नष्ट करने का Result ये निकला कि वर्षा-ऋतु आने पर भी बारिश नहीं हुई। सूखा पड़ने से इंसान पानी के लिए तरसने लगा। Oxygen की कमी से साँस लेने में परेशानी हो गई।

धरती पर हाहाकार मच गया। इंसान दौड़ा-दौड़ा धर्मराज के पास पहुँचा– 'प्रभो! आपके रहते ये क्या हो रहा है?' धर्मराज– 'ये तुम्हारी करनी का ही फल है।' मानव– 'वो कैसे?'

धर्मराज– 'इस संसार में जीव छः प्रकार के शरीर (काय) धारण करते हैं–

1. पृथ्वीकाय– मिट्टी का शरीर धारण करने वाले जीव
2. अप्काय– पानी का शरीर धारण करने वाले जीव
3. तेउकाय– अग्नि का शरीर धारण करने वाले जीव
4. वायुकाय– हवा का शरीर धारण करने वाले जीव
5. वनस्पतिकाय– पेड़-पौधों का शरीर धारण करने वाले जीव
6. त्रसकाय– चलने-फिरने वाले शरीर को धारण करने वाले जीव, जैसे– Insects, Animal, Man.'

धर्मराज– 'इन छः कायों में त्रसकाय को और त्रसकाय में मनुष्य को सबसे समझदार माना जाता है, पर दुख की बात है कि तुम अपनी Life के लिए Essential इन पाँचों कायों को नष्ट करने में लगे हुए हो। अभी भी समय है, संभल जाओ। इन पाँचों की सुरक्षा में ही तुम्हारी सुरक्षा है।'

इंसान ने धर्मराज के चरणों पर हाथ रखकर कसम खाई– 'आगे से मैं इनकी सुरक्षा का ध्यान रखूँगा।'

धर्मराज– 'तो जाओ, सुख से रहो।'

□□□

★★★★★ **तीसरा बोल – काय छः** ★★★★★

12. भगवान् महावीर स्वामी

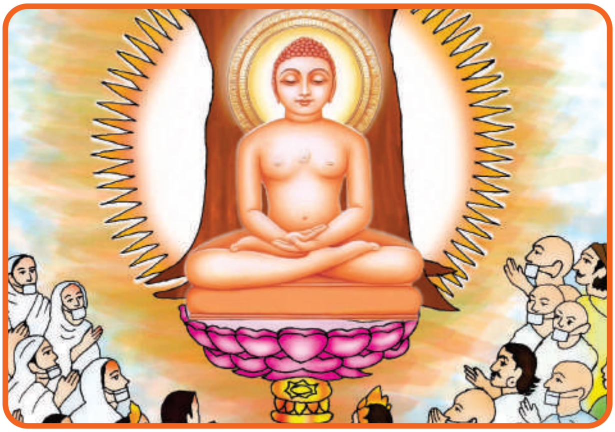

भगवान् महावीर स्वामी, जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। उनका जन्म ईसा से **599 (B.C.)** वर्ष पूर्व बिहार में 'क्षत्रिय कुंडग्राम' में मार्च के महीने (चैत्र सुदी त्रयोदशी) को हुआ। उनके माता-पिता का नाम रानी त्रिशला व राजा सिद्धार्थ था। उनके जन्म के बाद राजा सिद्धार्थ के राज्य में धन-धान्य (Wealth) की वृद्धि (Increment) होने से माता-पिता ने 'वर्धमान' नाम रख दिया। आगे चलकर उनका नाम 'महावीर' व 'ज्ञात पुत्र' भी पड़ा।

महावीर बचपन से ही बड़े निर्भीक (Brave) थे। एक बार बच्चों के साथ खेलते हुए बीच में साँप (Snake) आ गया तो उन्होंने उसे हाथ से उठाकर एक तरफ फेंक दिया।

उन्हें जन्म से ही **तीन ज्ञान (मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, व अवधि ज्ञान)** थे।

महावीर आरम्भ से ही वैरागी थे, परन्तु माता-पिता की इच्छानुसार उन्होंने क्षत्रिय कन्या 'यशोदा' से शादी करवा ली और उन्हें एक पुत्री पैदा हुई, जिसका नाम प्रियदर्शना रखा गया। **28 वर्ष की आयु** में महावीर के माता-पिता का देहान्त हो गया और **30 वर्ष की आयु** में बड़े भाई नन्दी-वर्धन की आज्ञा से दीक्षा ग्रहण कर ली।

श्रमण महावीर को साधना काल में अनेक कष्ट आए। जैसे एक बार एक ग्वाले ने उन्हें रस्सियों से मारा। एक बार चंड-कौशिक सर्प ने उन्हें डंक मारा। संगम देव ने अनेक कष्ट दिए आदि-2।

श्रमण महावीर ने **12½ वर्ष** की साधना करने के पश्चात **केवल ज्ञान (Complete Knowledge)** को प्राप्त कर लिया और इस प्रकार से अपने 4 घाती कर्मों को खपाकर अरिहंत भगवान् बन गए।

अरिहंत बनने के बाद उन्होंने लोगों को उपदेश देकर साधुव्रतों व श्रावक व्रतों के नियम करवाकर तीर्थ की स्थापना की, अतः वे 'तीर्थंकर' भी कहलाए।

भ. महावीर के साधना काल के कुल **4515 दिनों में 4166 दिन** उनकी तपस्या के हैं। उनकी तपस्या हमेशा निर्जल होती थी। पूरे साधना काल में सिर्फ 2 घड़ी (48 Minutes) उन्होंने नींद ली। शेष समय प्रायः मौन और ध्यान में रहते थे। भ. महावीर स्वामी **72½ वर्ष** की आयु में पावापुरी में अमावस्या के दिन निर्वाण (Liberation) को प्राप्त हो गए।

13. जैन बालक के कर्तव्य

1. **नमस्कार करनाः** प्रतिदिन सुबह-2 उठकर माता-पिता को नमस्कार करना (जय जिनेन्द्र करना)। इस दुनिया में हमारे ऊपर सबसे बड़ा उपकार हमारे माता-पिता का है, उन्होंने दुःख पाकर भी हमारा लालन-पालन किया है और हमें खुश रखा है।
2. **सेवा भावः** माता-पिता को कभी भी नहीं भूलें, न ही उनके सामने उल्टे बोलें। बीमारी में उनकी मन लगाकर सेवा करना, क्योंकि माता-पिता व बड़ों की सेवा करना बहुत बड़ी धर्म क्रिया है।
3. **इन्द्रियों का संयमः** अपनी जीभ व आखों पर Control रखना जैसेः–

(a) भोजन सीमित मात्रा में खाना, शाकाहारी भोजन का ही सेवन करना और जीभ के लोलुप नहीं बनना।

(b) अपनी वाणी से किसी को भी कड़वा नहीं बोलना, इससे सामने वाले को दुःख होता है।

(c) अपनी आखों से बुरी चीजें नहीं पढ़नी चाहिए और न ही देखनी चाहिये, जैसे अश्लील पुस्तकें, अश्लील Films आदि।

(d) हमें अपने से विपरीत (Opposite Sex) को बुरी नज़रों से नहीं देखना चाहिये और Bad Touch से बचना चाहिये।

(e) अपने कानों से अश्लील गाने नहीं सुनने चाहियें।

4. सिगरेट, गुटका, शराब आदि का सेवन नहीं करना।
5. दूसरों की सहायता करना।
6. हर रोज नवकार मंत्र, सामायिक आदि करने का प्रयास करना।

7. School, College आदि में कहीं भी नकल नहीं करना।
8. कभी भी चोरी नहीं करनी, झूठ नहीं बोलना।
9. अण्डे से बनी केक, पेस्ट्री, आइस्क्रीम इत्यादि कुछ भी वस्तु नहीं खानी।
10. पशु, कुत्ते, बिल्ली, पक्षी आदि को बिना कारण पत्थर व डण्डा आदि नहीं मारना।
11. मधुमक्खी आदि के छत्ते में आग नहीं लगाना।
12. भोजन व पानी झूठा नहीं छोड़ना।
13. मुंह से गाली नहीं देना।
14. गुरुओं के सम्मुख बैठकर मुंह पर रुमाल या मुख-वस्त्रिका लगाकर बोलना।
15. Junk food जैस बर्गर, नूडल, पिज्जा, चाऊमीन, चिप्स, कुरकुरे आदि खाने से बचना। ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।
16. अपने धर्म स्थान जैसे स्थानक या मन्दिर आदि में हर रोज एक बार जरूर जाना।
17. घर से बाहर जाते समय हमेशा अपने माता-पिता को बताकर जाना और कहां जा रहे हो, यह भी बताना।
18. अच्छे दोस्त बनाना और बुरे दोस्तों से दूर रहना।
19. घर के बाहर या सड़क आदि पर कूड़ा-कचरा नहीं फेंकना।
20. होली, दीवाली आदि पर पटाखे नहीं छोड़ना (इससे वायु प्रदूषण फैलता है)।
21. अधिक से अधिक पढ़ने की आदत बनाना।
22. साधु-साध्वी को आहार बहराने की भावना रखना।

14. Jain Festivals

1. महावीर जयन्ती

Occasion	Month	Incident	Way of Celebration
प्रभु महावीर का जन्म दिवस Birth Day of Lord Mahavira	चैत्र March/ April	इस दिन कुंडलपुर (बिहार) में राजा सिद्धार्थ की पत्नी रानी त्रिशला की कुक्षि से प्रभु महावीर का जन्म हुआ था।	• प्रभात फेरी निकालना। • सामाजिक Level पर प्रभु के भजन, कीर्तन व आरती करना। • तपस्या करना।

2. अक्षय तृतीया

Occasion	Month	Incident	Way of Celebration
प्रभु ऋषभदेव का पारणा दिवस Parna Day of Lord Rishabhdev	वैशाख April/ May	इस दिन श्रेयांस कुमार के हाथों से गन्ने के रस द्वारा प्रभु ऋषभदेव की एक वर्ष की तपस्या का पारणा हुआ था।	• वर्षीतप★ का पारणा और नई तपस्या को प्रारंभ करना। • दान करना।

(★ वर्षीतप - एक साल तक Alternate Days में उपवास करना)

3. पर्यूषण महापर्व

Occasion	Month	Incident	Way of Celebration
आत्म-शुद्धि के आठ दिन 8 Days of Self Purification	भाद्रपद August/ September	इस दिन मानव समाज ने इकट्ठे होकर अशुद्ध आहार (Non-Veg.) को छोड़ने का संकल्प किया था।	• साल-भर की गल्तियों के लिए क्षमा मांगना। • तपस्या करना। • शास्त्र-वाचना। • प्रतिक्रमण करना। मिच्छामि दुक्कडं

(8 दिनों में अंतिम दिन 'संवत्सरी महापर्व' के रूप में मनाया जाता है)

4. दीपावली

Occasion	Month	Incident	Way of Celebration
प्रभु महावीर का निर्वाण दिवस Salvation Day of Lord Mahavira	कार्तिक October/ November	इस दिन 'उत्तराध्ययन सूत्र' का उपदेश देकर प्रभु महावीर मोक्ष को प्राप्त कर गए थे।	• महावीर आरती गाना। • उत्तराध्ययन सूत्र पढ़ना। • 1-3 दिन की तपस्या करना।

Other Jain Festivals:- अनंत चतुर्दशी, ओली, पार्श्वनाथ जयन्ती....

15. Manners & Etiquettes

1. गुरु जी की तरफ पीठ करके नहीं बैठना चाहिए।

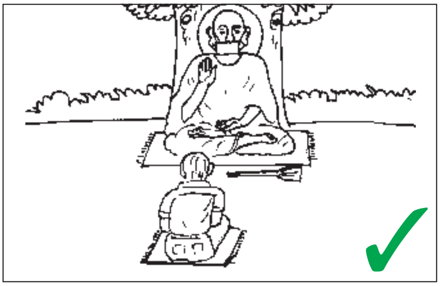

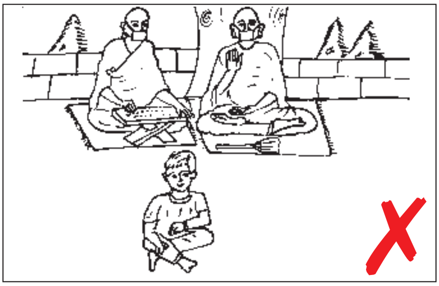

2. गुरु जी से **Bye-Bye, See You** नहीं बोलना चाहिए।

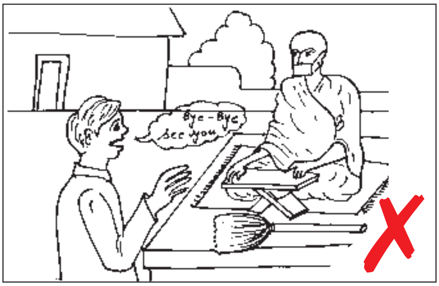

3. प्रवचन के समय माला नहीं फेरनी चाहिए, इधर-उधर नहीं देखना चाहिए।

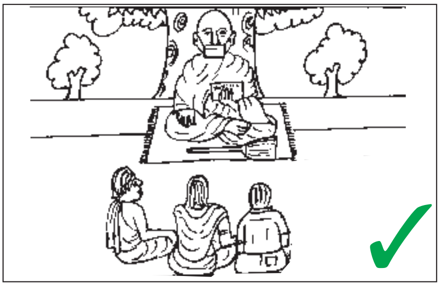

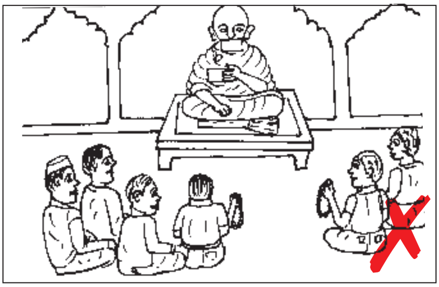

4. गुरु जी के कपडों पर पैर नहीं रखना चाहिए।

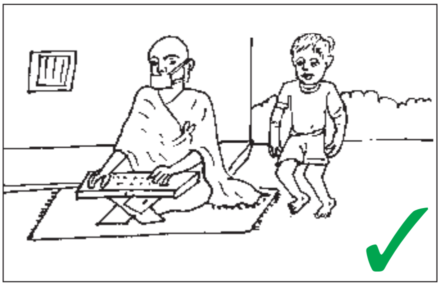

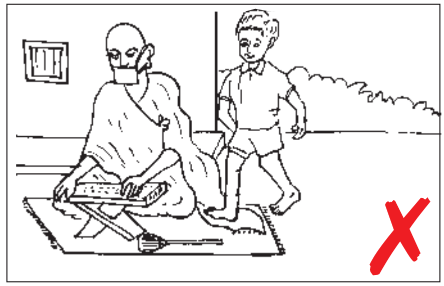

5. गुरु जी से **Hello! How are You?** नहीं बोलकर 'मत्थएण वंदामि' बोलना चाहिए।

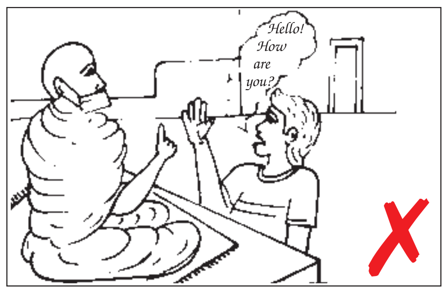

6. संत जब कोई कार्य कर रहे हों या ध्यान में हों तो चरण स्पर्श नहीं करने चाहिए।

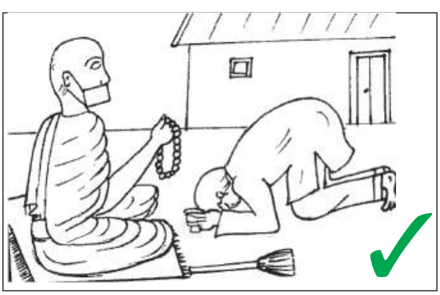

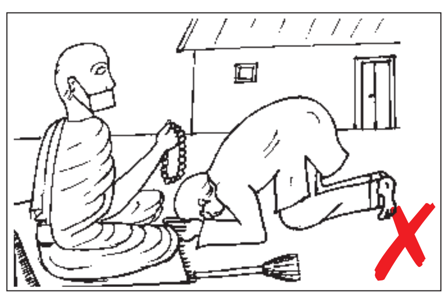

7. गुरु जी के चरणों के अलावा शरीर को **Touch** नहीं करना चाहिए।

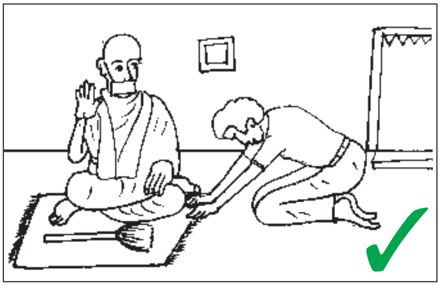

8. लड़के/पुरुष को साध्वी के चरण स्पर्श नहीं करने चाहिए।

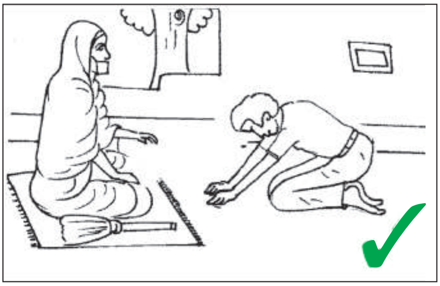

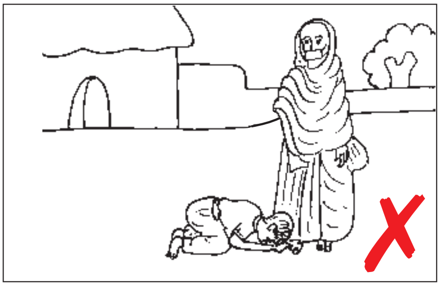

9. लड़की/स्त्री को साधु के चरण स्पर्श नहीं करने चाहिए।

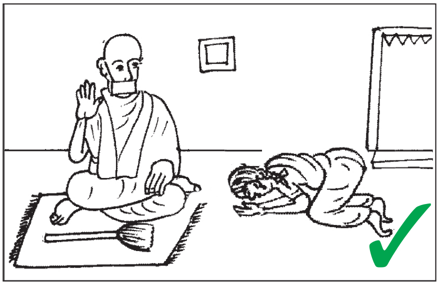

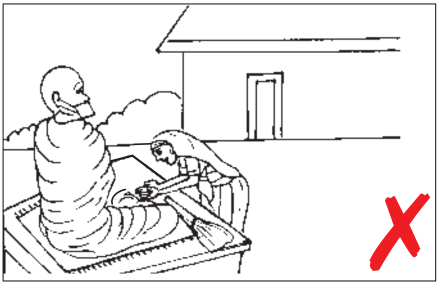

16. हम बालक हैं

हम बालक हैं, तुम पालक हो, सबके ही प्रभो तुम मालिक हो।
हम करते रहें तेरी भक्ति, सबके ही प्रभो, तुम मालिक हो ॥ टेक ॥

1. हम नम्र रहें शिक्षा पाएं, अपने पूज्यों के गुण गाएं।
तेरे अनुशासन में रहना, इस जीवन के, तुम मालिक हो ॥

2. बुद्धि हो सरल और दिल कोमल, तुमसे शिक्षा मिलती प्रतिपल।
तन मन दोनों तुमको अर्पण, सर्वस्व तुम्हीं, तुम मालिक हो ॥

3. हम कभी भटक जाएं भी अगर, तुम राह पे ले आना हे रहवर।
हमको दर्शन देते रहना, हम करते रहें, तुम मालिक हो ॥

4. अपने कर्त्तव्य निभाते रहें, निज गन्तव्य को पाते रहें।
सत्यनिष्ठा न कभी छोड़े, दे दो शक्ति, तुम मालिक हो ॥

तर्जः हर देश में तू ...

17. Numers Poem

1	2	3	4	तुम सब करो एक दूजे से प्यार
5	6	7	8	सदा याद रखो सच्चाई का पाठ
9	10	11	12	थूक दो अपना गुस्सा सारा
13	14	15	16	सफल करो मानव चोला
17	18	19	20	मत करो एक दूजे से रीस
21	22	23	24	जैन धर्म के तीर्थंकर चौबीस

18. हाय हैलो छोड़िए जय जिनेन्द्र बोलिए

1. सुब उठें मम्मी से बोलें, जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र
2. अपने पापा जी से बोलें, जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र
3. दादा और दादी से बोलें, जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र
4. भैया से, दीदी से बोलें, जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र
5. स्कूल में सर मैडम से बोलें, जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र
6. सभी साथियों से हम बोलें, जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र

19. वीर भगवन्

वीर भगवन् तुम्हे वन्दना, तेरे चरणों में है प्रार्थना,
छोटे बालक हैं हम, सच्चे पालक हो तुम,
रखना हम पर सदा तुम कृपा ॥ टेक ॥

1. राह में हैं बड़ी मुश्किलें, तोड़ती मन खड़ी मुश्किलें,
छाया अंधकार है, मन ये लाचार है,
कैसे हो दूर ये सिलसिले, कर रहे हैं यही कामना,
हो अंधेरे में भी चाँदना ॥

2. सत्य की राह पर हम चलें, लेने निःस्वार्थ सब फैसले,
डगमगाएं ना हम, लडखडाएं ना हम,
विषय कर्दम से बचकर चलें, करना कष्टों का है सामना,
गिरते हों हम, तुम्हीं थामना ॥

3. प्यार का दरिया बनकर बहे, सबको आगोश में अपने लें,
कोई हो गर दुखी, करना उसको सुखी,
रह जाए ना कोई कमी, परहित की रहे भावना,
लेनी 'पावन' हमें प्रेरणा ॥

तर्जः ए मालिक तेरे बन्दे...

20. जयकारे

1 त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की।

2 भगवान् महावीर का संदेश, जीओ और जीने दो।

3 एक - दो - तीन - चार, जैन धर्म की जय - जयकार।

4 पाँच - छः - सात - आठ, जैन धर्म के लग गए ठाठ।

5 नौ - दस - ग्यारह - बारह, जैन धर्म का बजे नगाड़ा।

6 तेरह - चौदह - पन्द्रह - सोला, मुक्ति का दरवाज़ा खोला।

7 सत्रह - अठारह - उन्नीस - बीस, जैन धर्म है बिसवा बीस★।

★ बिसवा बीस = $\frac{20}{20}$ 100 % Complete

8 इक्कीस - बाईस - तेईस - चौबीस, जैनों के तीर्थंकर चौबीस।

9 जो बोले सो निर्भय, जैन धर्म की जय।

'गुरु सुदर्शन संघ' के जयकारे

10 संयम सेवा स्वाध्याय विनय, गुरु सुदर्शन संघ की जय।

11 गुरु मदन के बाल की, जय सुदर्शन लाल की।

12 जब तक सूरज चाँद रहेगा, गुरु सुदर्शन नाम रहेगा।

13 गूँजे धरती और आकाश, जय सुदर्शन जय प्रकाश।

14 फूल खिले हैं कदम-कदम, जय सुदर्शन जय पद्म।

15 पावन वाणी पावन वेष, जय सुदर्शन जय नरेश।

जयकारे लगाने से :-

1. मन में उत्साह आता है।
2. माहौल खुशनुमा हो जाता है।
3. जुबान पवित्र हो जाती है।

21. Jain Poem

Very Sweet Very Sweet Jain Dharam
We Love We Love Jain Dharam
Live & Let Live Jain Dharam
Forget Forgive Jain Dharam
Never Fight Never Fight Jain Dharam
Ever Bright Ever Bright Jain Dharam
Do Good Do Good Jain Dharam
Be Good Be Good Jain Dharam

1. जन्मदाता, विद्यादाता एवं धर्मदाता की सेवा सदा फलदायी होती है।
2. बोलने के तरीके से इंसान की सज्जनता का पता लगता है।
3. आगम सब व्यथाओं का ईलाज है।
4. ज्ञानवान बनने की अपेक्षा चारित्रवान बनना श्रेष्ठ है।
5. अपनी चिंता अपने ही विचारों से खत्म होगी।
6. सात कुव्यसनों से दूर रहने वाला ही अच्छा इंसान बन सकता है।
7. विद्या पाने का लक्ष्य है सत्य को पाना
8. जहाँ विश्वास नहीं वहाँ डर है।
9. अगर बड़ों को गुस्सा दिला रहे हो तो समझो अपने ही पुण्य का क्षय कर रहे हो।
10. यदि सामायिक नहीं करते तो समझो अभी भगवान् का धर्म नहीं फरसा।
11. जो शिष्य सुपात्र है वह दो बातें कभी नहीं करेगा 1. गुरु की अविनय 2. गुरु की निंदा

भाग-1

जैन संस्कार शिविर समिति, दिल्ली के मुख्य उद्देश्य

1. जैन धर्मानुसार जीवन-शैली अपनाकर आनन्द-युक्त जीवन (blissful life) बनाना।
2. जैन धर्म के समृद्ध इतिहास, संस्कृति, दर्शन और साधना पद्धति को अत्यन्त सरल व आधुनिक तकनीक से सिखाना।
3. सम्प्रदाय-निरपेक्ष धर्म की सही जानकारी देना।
4. परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति वफादार और जागरूक नागरिक तैयार करना।
5. स्वाध्याय-शील बनने की प्रेरणा देना।
6. भय-मुक्त धार्मिक क्रियाओं की तरफ प्रेरित करना।